1924A Letters to my elder brothers

(See 1936A On Family and Money Matters)

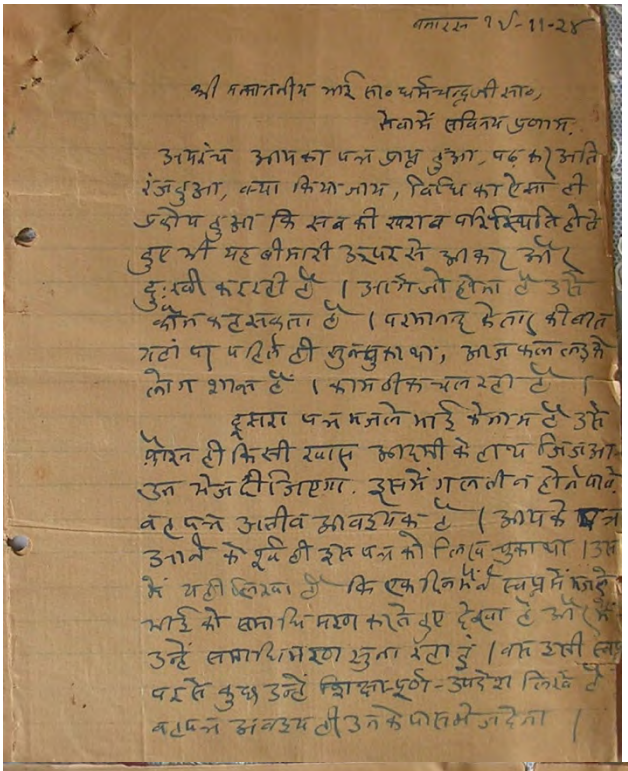

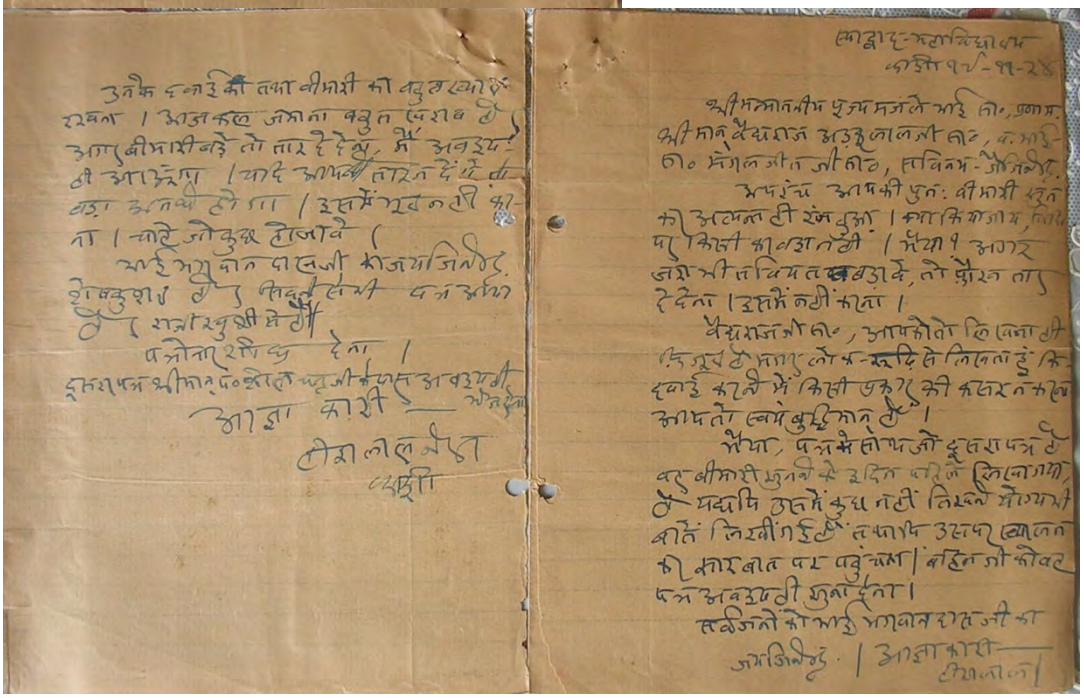

बहिन की तबियत का हाल, अपनी तबियत का हाल अवश्य ही पत्र लिख कर या लिखवाकर अवश्य ही शीघ्र देना। भूपालके पे।

आज्ञाकारी — हीरालाल।

स्याद्वाद महाविद्यालय
काशी १६-११-२४

श्री मान्यनीय पूज्य मजले भाई सा०,
सविनय प्रणाम.

अपरंच आज कुछ आत्म-कल्याणार्थ आपको पत्र लिखने बैठा हूं। अतः यदि शास्त्र-दृष्टि के अनुसार कोई छोटी-मोटी बात लिख जाऊं तो उसपर ख्याल न कीजियेगा.

मुझे हमेशा स्वप्न में आप दिखाया करते हैं, एक दिन तो यहां तक देखा- कि आप समाधि-मरण कर रहे हैं- और मैं समाधिमरण सुना रहा हूं। बस, उसी दिन से हृदय में यही इच्छा उठा करती है कि किस प्रकार मैं आप को अपने कल्याण करने के लिए सुझाऊं, इसी लिए आपको आज पत्र लिखने बैठा हूं। मैं कोई बनावटी भाव से नहीं लिख रहा हूं किन्तु उसी दिन से हृदय में ऐसी गहरी चोट बैठ गई है जिसका वर्णन करना असम्भव है।

भैया! आप की सारी जिन्दगी हो गया, दूसरों के लिए जितना हो सका, किया। जब हम लोग बच्चे थे, उस समय आपने अपना कर्तव्य पालन किया। मगर अब उस कर्तव्य की आवश्यकता नहीं है। अतः आपसे और बहिन से यही प्रार्थना है कि किसी अच्छे स्थान पर रहें, और दुनियां के आरंभ-परिग्रह छोड़ कर आत्मा की तरफ नजर फेरें। मुझे हमेशा इस बात का रंज रहता है कि मैं बाहर उपदेश वगैरह देने जाता हूं, लोगों को धर्म सुना कर प्रतिज्ञा वगैरह लिवा कर उनके कल्याण का मार्ग सुझा आता हूं। मगर घर वालों का इतना भी नहीं कर पाता हूं।

भैया, जरा ख्याल तो करो, कहां से — किस अगम-दुर्गम-संसार-समुद्र से हम इस छोटी सी जिन्दगी को लेकर आए हैं और न-मालूम किस समय फिर उसी संसार-समुद्र में गोता लगाना है। जिस सम्यग्दर्शन की प्राप्ति बिना आजतक हम इस संसार में घूमे हैं- वही सम्यग्दर्शन यदि फिर भी ऐसे उत्तम-श्रावक-कुल पाकर भी प्राप्त नहीं कर पाया तो, न मालूम किस प्रकार अनन्त काल पर्यन्त संसार में घूमेंगे और असह्य अनन्त-दुःखों को सहेंगे। यदि इस मनुष्य भव में कुछ-

दान-पुण्य भी किया, पुण्योपार्जन भी किया तो अधिक से अधिक एक भव में देव हो-जावेंगे, और फिर उसके बाद न मालूम कैसी २ यातनाएँ भोगने पड़ेंगी।

भैया, जरा बहुत दूर की निगाह से देखिए तो अनन्त-अन्धकारमय जगत ही दिखाई देता है- पता नहीं लगता, कब तक हम उसे पार कर पावेंगे। यदि वास्तव में कोई संसार समुद्र से पार करने वाला है तो एक — सम्यग्दर्शन ही है। जबतक उसकी प्राप्ति होगी, तबतक अनन्त काल पर्यन्त भी दुःखों का अन्त नहीं है।

आपको मालूम होगा — मनुष्य पर्याय कितनी कठिनता से मिलती है। मानो समुद्र में गया हुआ रत्न ही मिल गया हो। ऐसी उत्तम मनुष्य पर्याय को पाकर भी लोग यों ही गंवा देते हैं। अनन्त काल तो बीत गया। उसके आगे नाना प्रकार के सुख-भी इन्द्रिय-जन्य भोगों के उनको तो जितना लालसे भोगा जाय, उतनी ही बढ़ती जाती है।

दौलतरामजी कहते हैं – "तृष्णा-तृषा बढ़ै इनतेंमें, ज्यों पीये जल खारी" यही हाल संसार का है – मुझे तो आश्चर्य होता है कि लोग इतने बड़े समझदार होकर भी अपने कल्याण की तरफ नहीं झुकते हैं। मैं झूठ नहीं लिखता – मुझे प्रतिदिन अजब बातों का ख्याल आता है और रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

भैया, आज कल जिन्दगी का कुछ भरोसा नहीं है। न मालूम कब क्या से क्या हो जाय। जिन्दगी में या यों कहिए कि संसार में कोई किसी का साथी नहीं है। यह तो सब कबूतरखाना है, शाम को आकर बस जाते हैं और प्रातःकाल उड़कर चले जाते हैं। न मालूम – मेरे क्यों हमेशा यह ख्याल होते हैं कि भैया, तुम क्यों दूसरों के पीछे अन्याय-पाप कर अपना पावन समय खराब करते हो। यदि आप कहें – कि उदर-पूर्ति के लिए तो कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा, सो ठीक है मगर अब कमा करके आपको और बहिन को खाना ठीक नहीं है, मैं दावे से कहता हूं, भैया मैं तुम्हारे, बहिन के, और बड़े भैया के हित तो अवश्य ही आराम से घर कर दूंगा।

बहिन को देखिए, वे बिचारी हमीं और के पीछे तकलीफ भी उठा रही हैं – और अपना धर्म व खराब कर रही हैं। अतः यही निवेदन है कि अब यदि इच्छा है, तो यहीं रहकर, अथवा जहाँ चाहें – रहकर आत्म-कल्याण करें। खूब शास्त्रों का अभ्यास कीजिए। यदि आज कल दर असल सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है तो तत्वज्ञान से ही हो सकती है (कारण कि आजकल परिणामों की स्थिरता शास्त्रों में ही हो सकती है। न आजकल वह पुराना ज़माना है जहाँ कि बड़े मुनि विहार किया करते थे और धर्मोपदेश देकर भव्य जीवों का कल्याण किया करते थे, और न वह शरीर-संहनन भी है जो अकेले वन खण्डों में रहकर तपश्चर्या किया करें। यदि कुछ है तो यही कि जहां — चार ज्ञानियों का सत्संग हो, धर्मसाधन का मौका हो, वहां रह कर आत्म-कल्याण करें। मेरी राय में तो आप व बहिन, दोनों जने दुनिया से नाता तोड़ दें और धर्मध्यान की तरफ़ नाता जोड़ें।

अपने पिताजी का हाल देखिए, जिनको देखकर हम-आप हंसते हैं और उनकी क्रियायें किस्सा-कहानी के तौर पर इधर-उधर कहते हैं। क्या कभी विचार किया, उन बिचारों का क्या कसूर। एक तो उन बिचारों के पूर्व पाप का उदय, दूसरे नालायकों के संग, जिससे उनका इलाज न हो सका। क्या दुनियां में पाप के उदय से कोढ़ सरीखे रोग श्रीपाल आदि को नहीं हुए थे जिनके दुर्गन्ध की सीमा न थी, जिनके पास उनके मां बाप आदि कोई भी नहीं जाते थे, मगर क्या उनके कोढ़ का इलाज न हो सका? अवश्य ही हुआ। निमित्त कारण भी कोई चीज़ है। इसलिए उनके पाप को भी हम लोगों पर ही समझना चाहिए।

मुझे लिखते हुए आंसू आ रहे हैं न मालूम जीव किस प्रकार से अपने पापों का फल भोगते हैं।

अपने घर का भी हाल देखिए। कुटुम्ब या घरभर में जितने आदमी हैं सभी एक एक का दुःखी हैं। किसी ने भी इसकी परवाह न ही की। और न अब भी करता है। क्या बड़े भाई को रोटी बनाने तक के लिए इतने बड़े घर में कोई नहीं है। यह सब अपने तीन-तेरह होने का फल है।

बहिन सा० से और आपसे यही प्रार्थना है कि दुनियां की रीति इसी प्रकार चली आई है और चली आता है। अतः सभी सांसारिक-आरम्भ परिग्रह छोड़कर जितना हो सके, धर्म को बटोरने की कोशिश करें। कितने दिनों की जिन्दगी है। आधा समय तो जिन्दगी की सोने में जाता है आधा बचा तो उसमें भी बालपन, वृद्धपन, जवानीपन और रोगादिक जो हैं जिनके कारण

है जीव को अपनी तरफ ख्याल भी नहीं होता है। आजीविका की फिक्र करना गुनाह है जो कुछ तकदीर में लिखा है वह टल नहीं सकता।
"दुनिया के कारखाने का खुदा खुद इन्तजाम करता है, न कर तू फिक्र रोटी की, गरज मर्द हाना है"
इससे मैं यह नहीं कहता कि सब काम छोड़कर हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाओ। किन्तु यह कहता हूं कि ममता को छोड़ो। हमेशा ही अपने अच्छे बुरे कामों की मनुष्य को जांच तथा आलोचना करनी चाहिए कि मैंने आज सवेरे से शाम तक पाप अधिक किया या पुण्य, कौन पलड़ा अधिक है। जैसे शाम को एक दुकानदार अपनी रोकड़ सम्हाल लेता है कि मेरी पूंजी में घाटा तो नहीं है। हमेशा दुकानदार को इस बात का ख्याल रहता है कि मेरी पूंजी तो ठीक है न? बस इसी प्रकार मनुष्य मात्र यही कर्तव्य है कि गृह के सब काम करता हुआ भी राजा भरत चक्रवर्ती के समान घर में विरक्त रहे। जो सौभाग्य बड़े २ तीर्थंकरों को प्राप्त नहीं था कि दीक्षा लेते ही केवलज्ञान हो जाना, वह राजा भरत को प्राप्त हुआ। मालूम पड़ता है कि गृह में रहते हुए भी आदमी अपनी कितनी उन्नति कर सकता है। किसी का कहना है ——

दिन गया संध्या हुई, संध्या गई तो रात है,
रात भी जाती रही, तो सामने ही प्रात है।
ऐन्द्रजालिक खेल ये, इनमें न तुम भूले रहो,
काल धोखा दे रहा है, क्यों मगन फूले रहो।

इसलिए भैया खूब सोच समझ कर आत्म-कल्याण की तरफ झुको।
दूसरे के उपकार करने के लिए भी यदि संक्लेश परिणाम होते हैं तो बुरे कर्मों का बन्ध होता है। इसलिए भैया झंझटों को छोड़ो।
अगले भव की आयु का बंध त्रिभाग में होता है, न मालूम कब त्रिभाग आ जावे, और कैसी आयुबन्ध हो जावे, ऐसा नियम है कि जैसे आयुबन्ध होते समय परिणाम होते हैं वैसी ही परभव की आयु भी बंध जाती है।

इसलिए जीव को हमेशा शुद्ध-परिणाम रखना चाहिए। न मालूम कौन से समय त्रिभाग का मौका आ जाय। ऐसा भी नियम है कि यदि त्रिभाग के समय ~~यदि~~ आयुबन्ध न हो पावे तो मरण के कुछ समय पहिले तो अवश्य ही आयुबन्ध परिणामों के अनुसार हो जाता है। आजकल के तो मरण भी आप जानते होंगे कि लोग कुटुंब तक भी नहीं बोल पाते हैं — कफ गड़गड़ाने लगता है भला वहां अच्छे परिणाम कहां तक हो सकते हैं फिर नियम से ऐसे लोगों की गति ~~खराब~~ खराब होती है। आजकल प्रायः मनुष्यों का त्रिभाग नहीं आ पाता है कि बीच में ही अकाल मृत्यु आकर अपने ग्रास बना लेती है। अतः प्रायः कर आजकल जीवों का आयुबंध मरण समय ही होता है। अतः हमेशा शुद्ध-परिणाम रखने की चेष्टा करनी चाहिए। मरण समय शुद्ध परिणाम तभी हो सकते हैं जब जीव पूर्व से ही आरंभ-परिग्रह से नाता तोड़ देता है।

इसलिए भैया, जितना हो सके, अपने कल्याण का उपाय सोच कर शक्ति-अनुरूप के प्राप्ति का उपाय कीजिए। जीवों को इस बात का तो कभी विचार ही नहीं करना चाहिए कि "अब पछताए होत क्या, चिड़ियां चुग गईं खेत।" अरे जिन्दगी भर भी पाप करने वाले अंजन-चोरादि एक क्षणभर के शुद्ध-परिणामों द्वारा तर गए।
प्रायश्चित्तादि करने से, जो हमने अशुभ कर्म बांधे हैं उनका अवश्य उत्कर्षण, अपकर्षण, संक्रमण आदि कुछ न कुछ अवश्य ही हो जाता है। यानी पापप्रकृतियों की स्थिति या अनुभाग कम हो जाते हैं यदि पीछे से भी आलोचना की जाय तो। अतः हमेशा अपने दैनिक कार्यों की आलोचना कम से कम शाम या सुबह तो अवश्य ही कर लेवे।
बस, यही आप को लिखना था।
लिखने को तो बहुत बातें हैं —

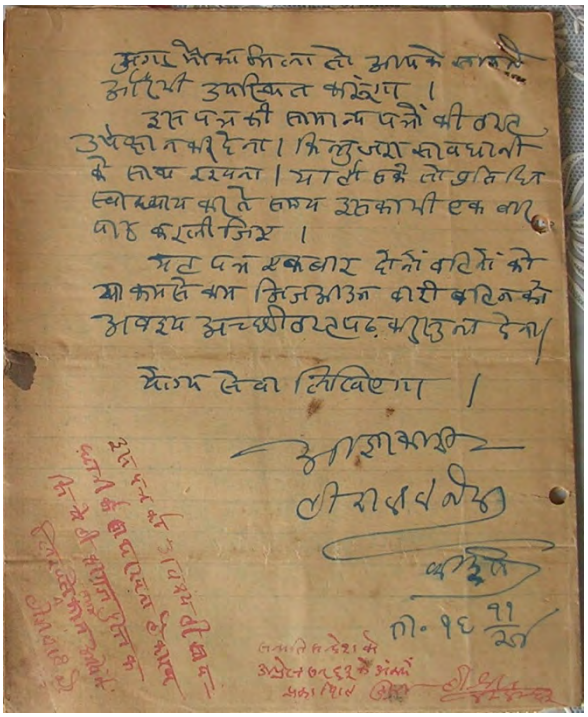

अगर मौका मिला तो आपके साथी
औरों भी उपस्थित करूँगा ।

इस पत्र को सामान्य पत्रों की तरह
उपेक्षा न कर देना । किन्तु जरा सावधानी
के साथ रखना । यदि हो सके तो प्रतिदिन
स्वाध्याय करते समय इसका भी एक बार
पाठ कर लीजिए ।

यह पत्र एकबार दोनों बहिनों को
या कम से कम निजआउन कोई बहिन को
अवश्य अच्छी तरह पढ़कर सुना देना ।

योग्य सेवा लिखियेगा ।

आज्ञाकारी
[illegible]

ता० १६ ११/२८

इस पत्र के अवश्य ही [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] के अप्रेल ०८ ६३ के अंक में प्रकाशित [illegible]

1936 On Family and Money Matters

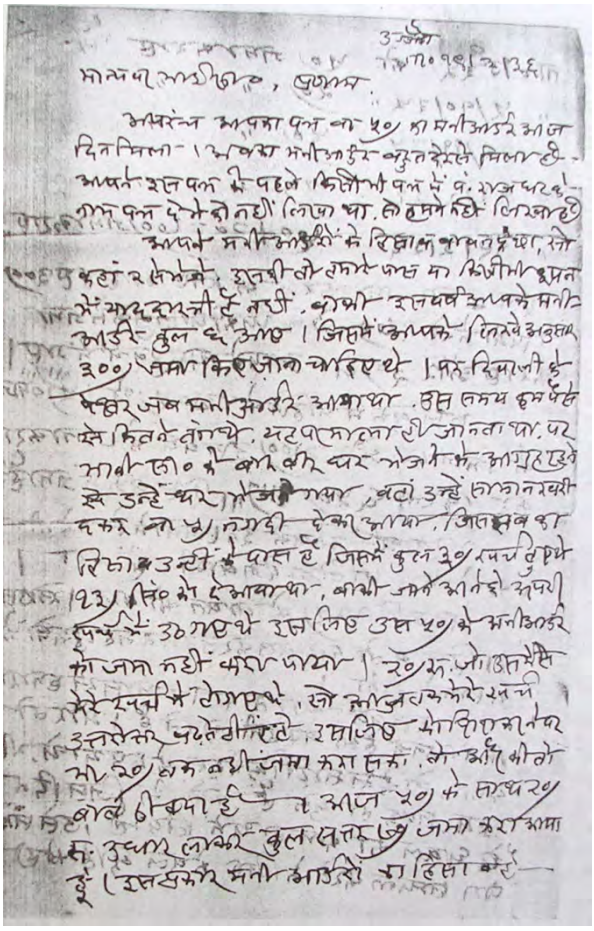

ता० १३/९/३५ को ५०) जमा कराए
" ५/१०/३५ " ५०) " "
" २६/११/३५ " ५०) "
" १२/२/३६ " ५०) "
" १९/३/३६ को ५०+२०=७०) जमा कराए.

कुल प्रकार जमा कराने के लिए आए हुए ३००) रुपयों में से २७०) तो आपकी पास बुक में जमा कराए और ३०) रु० आपके पास रख दिए गए।

पास बुक में पहिले के ३७०५) थे। ५) ब्याज के मिलाकर और २७०) इस वर्ष के जमा करा कर कुल ६५२०) [illegible] पास बुक में जमा हैं।

सारांश — आपके इन रुपयों में से मेरे नीचे एक भी पाई का लेन-देन बाकी नहीं रहा।

२६ मई १९३५) के बाबत की बात। [illegible] का हिसाब तो घर चल कर उन सब महापुरुषों के ही सामने होगा।

इस वर्ष लगातार १८ मास से हमारा कितना नुकसान हुआ यह हमीं जानते हैं। और तो क्या, जो केस साहित्य के रूप या थे, सो प्राय: नष्ट हो चुके हैं। क्योंकि जिन दिनों धवल का काम छापने लिए हैं, उसे तो सम्पन्न करने के लिए केवल बुद्धि ही

जो [illegible] जी या और भी आवश्यकता [illegible] है कि पत्रों [illegible] से लाभ कुछ नहीं है और मैं इस काम को छोड़ने को भी नहीं। यदि उनको जमीं ऐसा ही काम किया जायगा, तो काम में शिथिलता और [illegible] इसलिए [illegible] आवश्यकता [illegible] ग्रंथों की [illegible] है। इसके लिए [illegible] बोला है। इस काम के लिए तो प्रो० हि० के० [illegible] ही आवश्यकता [illegible] के सहारे पटरी में आलोचना [illegible] धवल का अनुवाद, संशोधन टिप्पणी आदि लिखे सका हूं और आगे काम करता रहूंगा।

उसके सिवाय २८५) के एक टाइपराइटर हिन्दी की अत्यन्त आवश्यकता है क्योंकि जिससे किया जाने वाला काम विद्वानों को [illegible] के लिए प्रति [illegible] भेजा जा सके। प्रो० हीरालाल जी [illegible] आने पर [illegible] की [illegible] फिर पत्रों [illegible] तो अपनी आमदनी ही खर्च हो जायगी। इसलिए इन सब बातों को सोचकर उक्त रुपये लिखाये हैं और आगे हजार पोस्टों और [illegible] करना पड़ेगा। तब कहीं पीछे जाकर यह रु० कुछ तत्त्व निकाल सकेगा।

मैं शायद घर न जा सकूंगा, क्योंकि रूपपाठ मिलाने के लिए आरा, [illegible] अन्य स्थानों पर अवश्य जाना पड़ेगा। जब इस काम को ठान लिया है, तो जैसा होगा, पूरा पार कर ही छोड़ेंगे।

शेष कुशल है। अब आपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। [illegible] बच्चों को [illegible] आशीर्वाद [illegible]

आपका
हीरालाल

(३)

आवश्यकता नहीं है. जो यही एक अप्रकाशित पुस्तक का जन ... इसके लिए – अर्थात् ~~[illegible]~~ मैं इस काम को अच्छी तरह कर सकता हूं. इस काम के प्रमाणिक बनाने के लिए और चावल के संशोधन सम्पादन एवं अनुवाद को प्रमाणिक बनाने के लिए मुझे निम्न लिखित ग्रंथ मंगाने पड़े हैं।

१ अभिधान राजेन्द्र कोष ७ भाग	२६५/
२ सत्यार्थ [illegible] ५ भाग	५०/
३ पाइअ सद्द महण्णवो	४०/
४ जीवाभिगम सूत्र	१०/
५ जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति	५/
६ राजप्रश्नीय [illegible]	३/
	३७५/

इसके अलावा एक आर्डर और दिया है यदि वे ग्रंथ मिल गए तो करीब १२०/ रु. और इसी के लगेंगे, क्योंकि बंबई, सूरत के पुस्तकालयों में [illegible] नहीं है। भावनगर को आर्डर दिया है।

१ निशीथ [illegible] भाष्य ४ भाग	४०/
२ लोक प्रकाश ४ भाग	३०/
३ भगवती सूत्र	१२/
४ आचारांग	१०/
५ अनुयोग द्वार	६/
६ नंदी सूत्र	५/
७ कल्पसूत्र ६ भाग	१५/

उपरोक्त

किसी तरह गुजरती रहती – [illegible]
(५)। [illegible] पं. प्रेमचंद जी का स्वर्गवास बहुत ही दुःखजनक घटना हुई। [illegible] २४ घंटे उनका ही चित्र सामने खिंचा रहा।

मैं अगस्त १५ दिन की छुट्टी लेकर बाबू को दिखाने कलकत्ते गए, क्योंकि आप के लिए उनकी बड़ी [illegible] थी। [illegible] गड़बड़ी से उन्हें नुकसान हो गया और उन्होंने एक दम नवोदित का कुछ धारण कर लिया. [illegible] उनके भा० प्रेमचंद का पत्र मिल गया था [illegible] कि बाबू के जैनोदय [illegible] में हम [illegible] चाहते हैं. [illegible] उन्होंने [illegible] और उनकी [illegible] कोई [illegible] नहीं आया. और [illegible] उन्हें [illegible]

[illegible] के पहले [illegible] १ जनवरी सन १९३५ को ही अलग हो गए थे. [illegible] तो [illegible] जब उन्होंने [illegible] नहीं [illegible] दिन की [illegible] लिख दिया [illegible] तो. इन [illegible] कि आप हैं तो आठ दिन के भीतर आ जाओ–

पता - विनोद निलय उज्जैन

श्रीमान् भाई [illegible], प्रणाम.

आपका ३१ [illegible] ता० २७।६ का लिखा पत्र मिला, [illegible] आपके [illegible] उत्तर प्रकार है।

[illegible] चांदी की लिए खरीद [illegible] की [illegible] ही करेंगे और [illegible] कर, बल्कि [illegible] लावेंगे.

अभी [illegible] ज्योतिषीजी से [illegible] बाबत [illegible] तो उन्होंने कहा कि नहीं [illegible] [illegible] खरीद लो. [illegible] रहेगा, [illegible] ७०/७५ [illegible] है कि अब [illegible] नहीं है। [illegible] दी ही है. क्योंकि [illegible] ही नहीं है, यदि [illegible] उतर भी गया तो [illegible] ने भी [illegible] नहीं है। [illegible] ९३८ के [illegible] [illegible] भी आवेगा, ऐसी तो हमें आशा है

~~OFFICE COPY.~~
~~SETH LALCHAND B. SETHI.~~

(२)

[illegible] है, क्योंकि यहां के स्कूल में भी [illegible] में पढ़ना व [illegible] है।

[illegible] जन्मकुंडली दिखाकर पूछा कि इसको किस तरह की शिक्षा दी जाय, जो उसके दिमाग के अनुकूल हो, तो उन्होंने भी कहा है कि इसका दिमाग मशीनरी बगैरह होगा. उसके ही [illegible] होगा और अच्छी तरह [illegible] करेगा. तो हमारा तो यही विचार है कि ऐसे [illegible] को [illegible] सरीखी संस्थाएं छोड़के ही [illegible] है। वह लोहे, तलवार, मोटर चलाने एवं अन्य औद्योगिक धंधों को सीखने के लिए काफी उत्सुक बना है।

और [illegible] तो [illegible] जो [illegible] की [illegible] है [illegible] है, [illegible] यहां के [illegible] आदि के [illegible] हैं. मैंने [illegible] करते हुए उसके [illegible] ११ बजे आया.

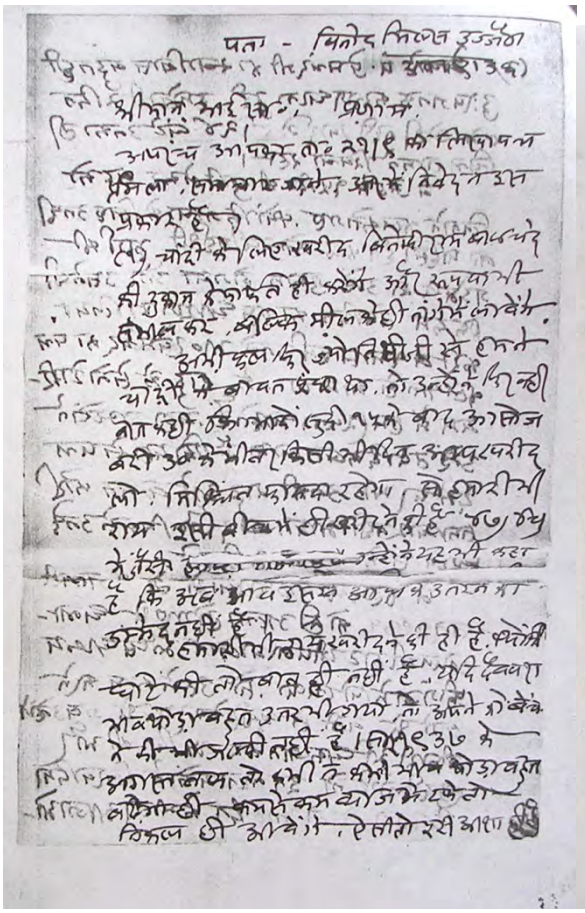

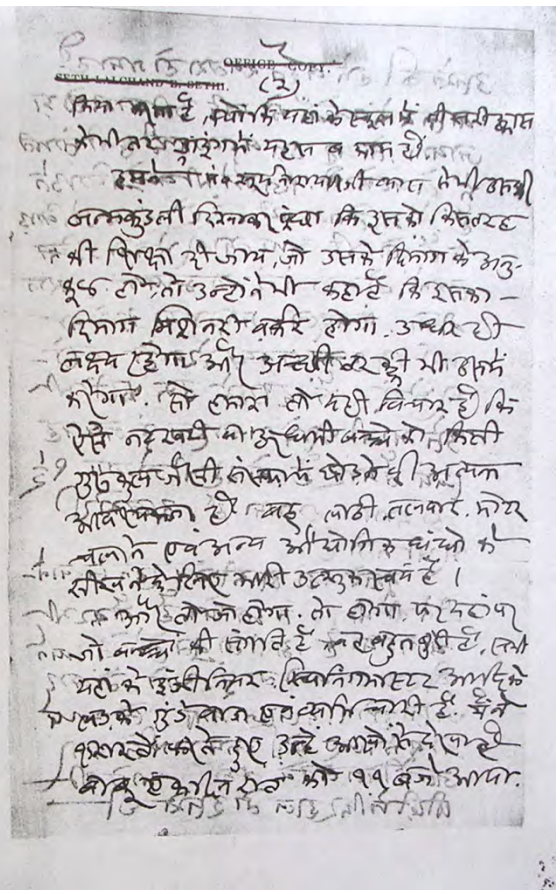

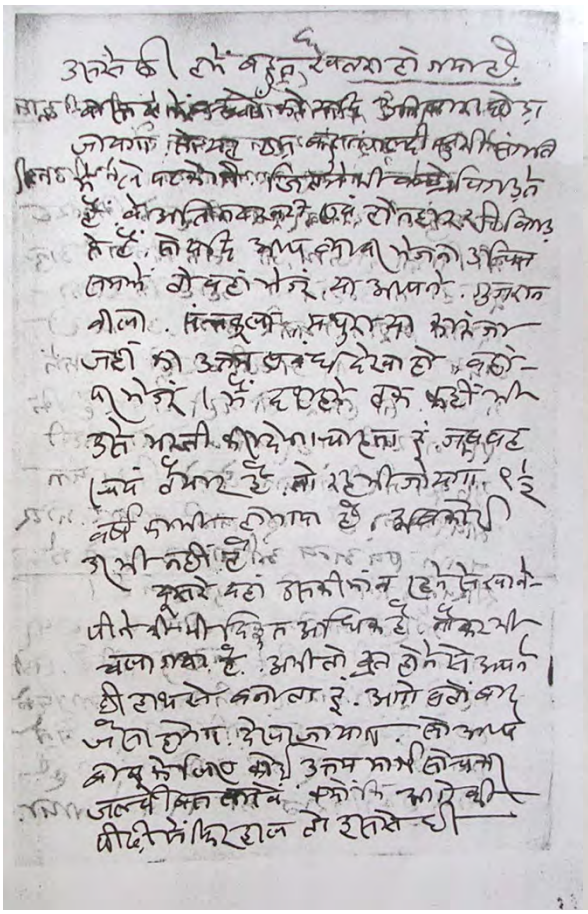

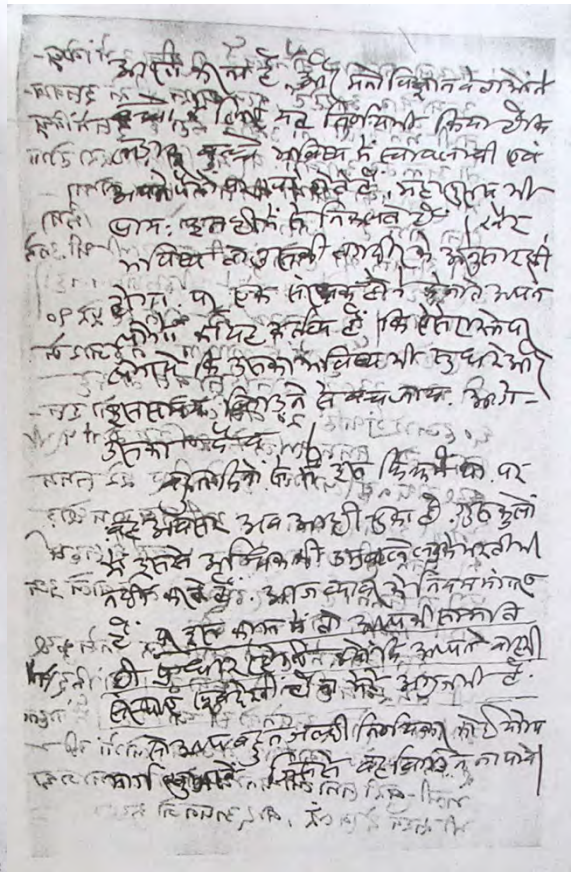

(६) स्वयम्भू का कार्य तो चलता है, एक बीच में विघ्न-
अत्यधिक आ रहे हैं, फल स्वरूप भी से इसका अब-
तक भी मेरे पुस्तकें. तो उन्होंने कहा है इसमें विघ्न
तो अलग कर आ गयी. पर यह लिखिया धरा होगा
और आपकी स्वीकृति का काम होगा —
ऐसा मेरा है. जिस वक्त हमने प्रारम्भ किया
था उस वक्त भी उनके कुंडली बनवा ली थी. उसके
ही [illegible] उन्होंने बीस हजार पद रही
महा [illegible] को इस कार्य तो कोई एक पूरे १०
साल होगये हैं. इतने में लगभग भी ने हजार के
ही काम हुआ है. इस हिसाब से तो यह
६० हजार ग्रंथ है २० वर्ष लेलेगा. तो इस-
प्रकार तो समस्त शक्ति के पूर्ण करने में [illegible]
कुछ समय नहीं लगेगा. इसके लिए पूरे समय
देने की आवश्यकता है। यदि सब काम छोड़
[illegible] इसमें ही लग जाऊं तो ४ वर्ष में सम्पूर्ण
पूरी हो सकता है और [illegible] वाले उसका
काफी विधि हो सकता है।

इस विषय में हमने अभी तक उनसे कुछ
भी तय स्वयं ही नहीं किया है। क्योंकि इसको
अभी तय होना अपने को ही चाहता है। मैं चाहता
हूं कि एक खंड प्रकाशित हो जाय, लोगों की
भली-बुरी सम्मति चर्चायें हो जाय. क्या उसका
भी स्वाद देख लूं, बाद अपना जो कुछ [illegible]

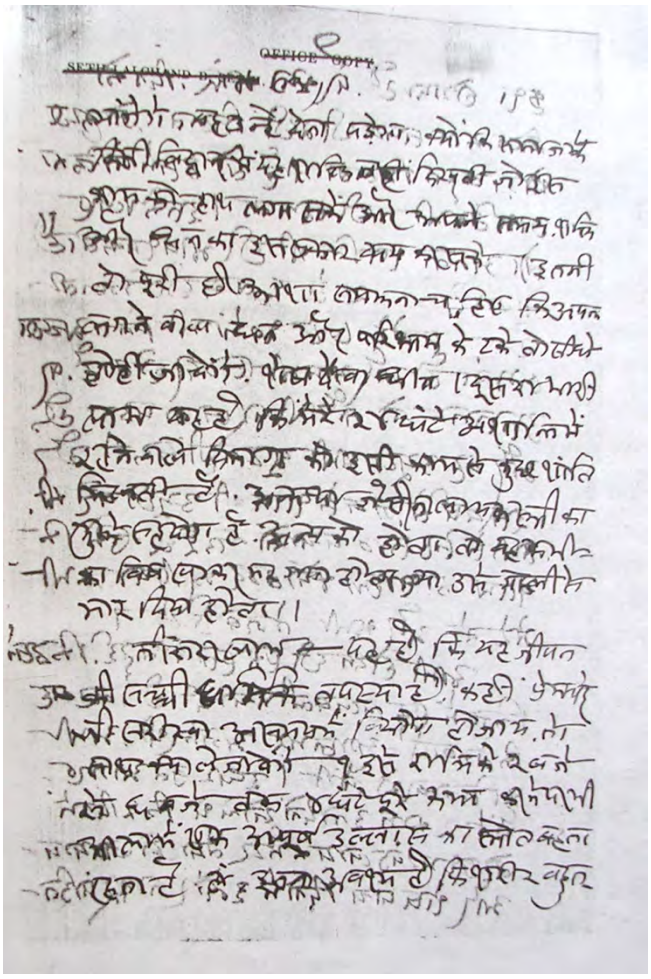

हुआ होगा है. [illegible] दिन को [illegible] जो [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] । इसके लिए [illegible] अनका [illegible] आवश्यक है [illegible] जो [illegible] [illegible] पड़ता है [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] मेरे [illegible] और [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करना चाहूँगा. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ११- से ४ तक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आज [illegible] [illegible] के लिए [illegible] [illegible] नहीं था [illegible] [illegible] है. [illegible] हूँ कि [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] नहीं हो सकता है [illegible] नहीं चल सकता है

आपका [illegible]
[illegible]